चातुर्वेदसंस्कृतप्रचार-ग्रन्थमाला-००४

भारतीय-वैभव-ज्ञानमाला

बाल-वर्गः

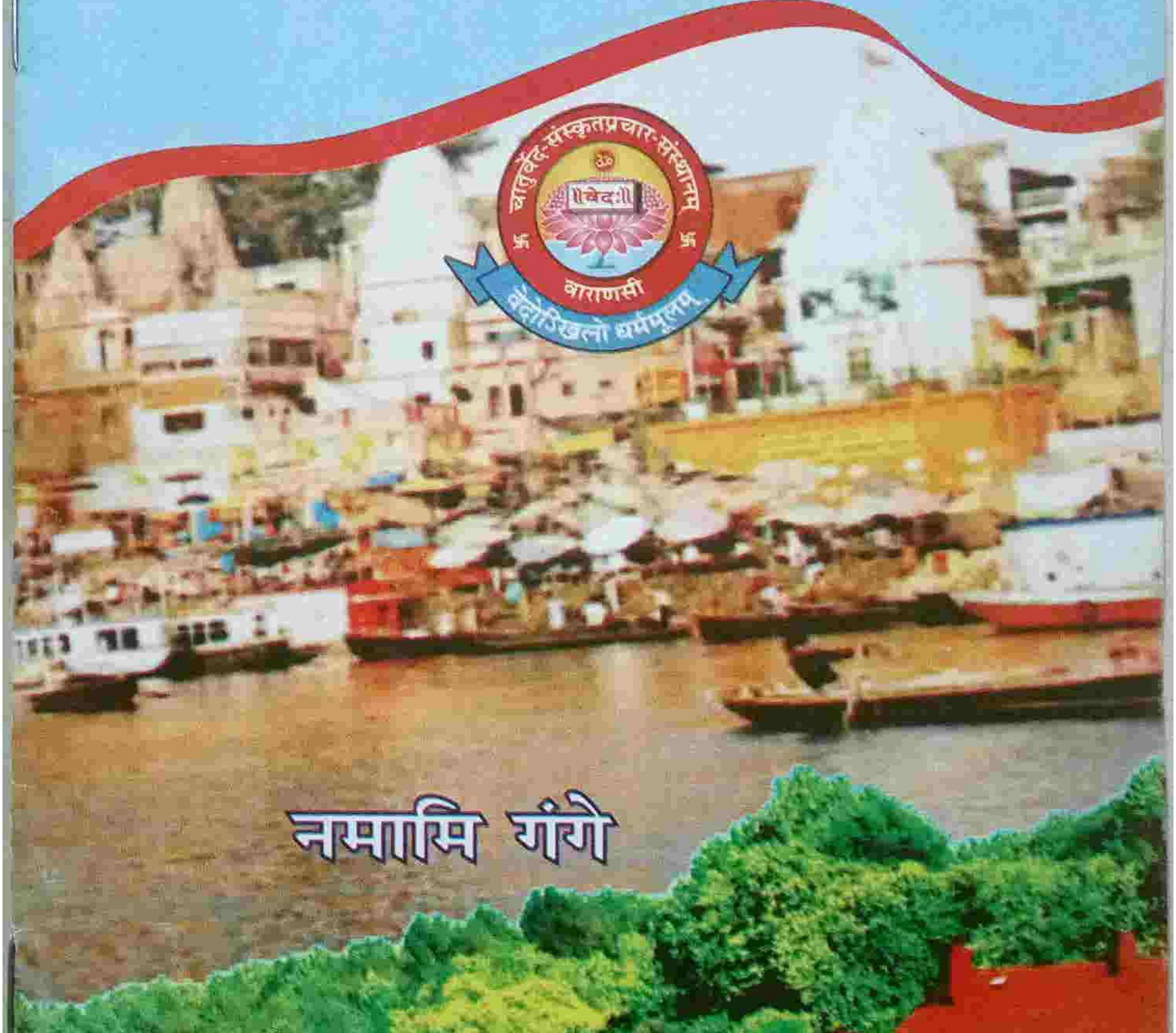

नमामि गंगे

* प्रकाशकः *

卐 चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम् 卐

काशी, (उ0प्र0)

प्रिय छात्रों,

आप को पता ही है कि हमारा देश भारत एक विशाल देश है। विभिन्न मत, पन्थ, सम्प्रदाय एवं धर्म को मानने वाले लोग यहाँ भाई चारे के साथ रहते हैं। विविधता में एकता हमारी पहचान है। इस देश ने सम्पूर्ण मानव को सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ाया है। ज्ञान-विज्ञान के प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद को दिया है। आज ज्ञान-विज्ञान जो प्रगति कर रहा है उस प्रगति का दृष्टिकोण वेद, स्मृति, पुराणादि विशाल संस्कृत साहित्य है। सभी धर्म, विचार इसके बाद ही अस्तित्व में आये।

हमारे धर्मग्रन्थों में जड-चेतन, प्रकृति-पुरुष सभी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जीवन सुख-दुःख दोनों से युक्त है, अतः दुःखों, कष्टों, परेशानियों से मुक्ति के लिए बहुत से उपाय बताये गये हैं। प्रकृति को ईश्वर का अप्रतिम उपहार कहा है। इस उपहार को हम अपना धरोहर बनावें। जीवन के उत्कर्ष- अपकर्ष का सामना कर सुख का मार्ग प्रशस्त करें। इसके लिए जीवन को स्वस्थ बनाना होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। स्वस्थ मस्तिष्क सुसंस्कृत समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करता है। कहा भी गया है- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (धर्म - कार्य को सम्पन्न करने का प्रथम साधन है शरीर। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं0 मदन मोहन मालवीय जी छात्रों को हमेशा कहते थे- सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति, आत्मत्याग के द्वारा अपने समाज में सम्मान के योग्य बनो।

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।
देशभक्त्याऽत्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव।।

भारतीयवैभव-ज्ञानपरीक्षा के द्वारा एक आह्वान

वन, नदियाँ मानव समाज के लिए वरदान होते हैं। अनेक ऋषि-मुनियों ने इन पवित्र नदियों के तट पर, वृक्षों के नीचे बैटकर तप किया, अपने अपने मनोरथों को पूर्ण किया है। हमारे देश भारत में इनका सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक महत्त्व है। देश की अपनी धरा को हरा-भरा तथा स्वच्छ करने के लिए सरकार के साथ आप और हम मिलकर नदियों को स्वच्छ रखें, वृक्षारोपण करें, आरोपित वृक्षों का संरक्षण करें अपनी धरा को सजाएँ। अपनी मातृभूमि को स्वर्ग से सुन्दर बना कर प्रकृति को उपहार दें।

आइये हम संकल्प लें जन्मदिन पर वृक्ष लगायेंगे पृथ्वी को हरा-भरा बनायेंगे। अपने आस-पास कहीं वृक्ष कटे, गिरे, या सूखे तो वहाँ वृक्षारोपण को प्रेरित करें या स्वयं वहाँ वृक्ष लगायें। वृक्ष लगाने की स्पर्धा करें, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर प्राकृतिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य का उपहार प्राप्त करें।

सधन्यवाद!

आपका अपना
डॉ. चन्द्रकान्तदत्त शुक्ल
लेखक/संपादक/परीक्षा संयोजक
8318867067

प्रकाशकः
चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्
सम्पर्कसङ्केतः
मञ्जूत्रिशक्तिभवनम्
सी.के. 66/22 बेनियाबागः, वाराणसी
csps.kashi@gmail.com
f चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्

अस्माकं देशः

भारतस्य प्राचीनं नाम किम् किम् अस्ति?

आर्यावर्तः, भरतखण्डः, हिन्दु-स्थानम्, भारतवर्षम् आदि ।

अस्माकं देशस्य नाम 'भारतः' कथम् अभवत् ?

दुष्यन्त-शकुन्तला पुत्रः 'भरत' नाम्ना अस्माकं देशस्य नाम भारत अभवत्।

भरतः कीदृशः पुत्रः आसीत् ?

भरतः एकः वीरः, साहसी, चतुरः, आज्ञापालकः, मातृ-पितृभक्तः, गुरुभक्तः, राष्ट्रभक्तः च आसीत् ।

बाल्यावस्थायाम् एव सः सिंह शावकानां दन्तान् गणयतिस्म।

हमारे देश का नाम भारत क्यों पडा ?

महाभारत की एक कथा है कि- काश्यप ऋषि के आश्रम के समीप एक सिंहशावक (शेर का बच्चा) अभी अपनी माता के स्तन से आधा ही दूध पीया था कि एक बालक आया और उस सिंह शावक के साथ खेलने के लिए अपनी हाथों से पकड कर अपनी ओर खींचते हुए कह रहा था **"मुँह फैला रे सिंह के बच्चे ! मुँह फैला, मैं तेरे दाँतों को गिनूंगा।"** (जृम्भस्व रे सिंहशावक ! जृम्भस्व, दन्तान् ते गणयिष्यामि)। ऐसा देख सुरक्षा में लगी **तापसियों ने कहा-** हे

बालक! चंचलता मत कर, तू जहाँ होता है वहीं अपना स्वभाव दिखाता रहता है। उसके बच्चे को छोड दे नहीं तो यह सिंहनी तुझे धर दबायेगी। आ तुझे मैं और खिलौना दे दूँगी। इस पर बालक ने मुस्कराकर, मुँह चमकाते

हुए कहा- **ओ माँ मैं तो बहुत डर गया।**

जानते हैं यह वीर एवं साहसी बालक कौन था ? चन्द्रवंशी महाप्रतापी राजा दुष्यन्त और महारानी शकुन्तला का पुत्र परम तेजस्वी - **भरत** । जिसने समस्त भारत में चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किया था, साथ ही उसने इस सम्पूर्ण भू-भाग में आर्य-संस्कृति का प्रचार भी किया था। तभी से यह देश भारत कहलाया।

इसी निर्भीक बालक एवं चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

भारतदेशस्य विस्तारः -

दक्षिण- पश्चिम-दिशि-	हिन्द-सागरः (अरबसागरः)
दक्षिण-पूर्व-दिशि-	गंगासागरः (बंगाल की खाड़ी)
पश्चिम-उत्तर-दिशि-	हिमालय-पर्वतः
दक्षिण-तटे-	कन्याकुमारी
उत्तर-पूर्व-दिशि-	पाकिस्तानम्, अफगानिस्तानम्
पूर्व-दिशि-	वर्मा
उत्तर-दिशि-	चीनदेशः, त्रिविष्टपं (तिब्बत) नेपालः, भूटानः, हिमालयः।

1. क्षेत्रफल-दृष्ट्या भारतस्य विश्वे किम् स्थानम् अस्ति? **-सप्तमम्**
2. भारत देशस्य राजधानी- **-नवदेहली**
3. अस्माकं राष्ट्रीयता का अस्ति? **-भारतीयः**
4. शास्त्रेषु भारतभूमिः किं कथ्यते? **-माँ, माता, जननी**
5. भारतस्य राष्ट्रीय-भाषा किम् अस्ति? **-हिन्दी**
6. भारतस्य सांस्कृतिकी भाषा **-संस्कृतम्**
7. भारतीय-संस्कृतेः आधारः किम् अस्ति? **-संस्कृतम्**
8. संस्कृत-भाषायाः अपरं नाम किम् अस्ति् - **देवभाषा, गीर्वाणवाणी दैवीवाक्**
9. भारतस्य **प्रवेशद्वारम्** (गेटवे ऑफ इण्डिया) कुत्र अस्ति? **-मुम्बई**
   (अरब सागर के रास्ते भारत में प्रवेश का द्वार)

10. **भारतद्वारम्** (इण्डिया गेट) कुत्र अस्ति? **-नव देहली**

11. भारतस्य जनसंख्या किम् अस्ति? **-एकशतम् एकविंशतिः कोटिः** (एक सौ इक्कीस करोड)

11. जनसंख्या-दृष्ट्या **विश्वे** भारतस्य स्थानं किम्? **-द्वितीयम्**

12. क्षेत्रफल-दृष्ट्या **विश्वे** भारतस्य स्थानं किम्? **-सप्तमम्**

भारतस्य राष्ट्रीय-प्रतीकम्

अस्माकं भारत-देशस्य राष्ट्रीयः ध्वजः किम् अस्ति? -त्रिवर्णः(तिरंगा)

कपिस-वर्णः **-शक्ति-प्रतीकः**

श्वेत-वर्णः **-शान्ति-प्रतीकः**

हरित-वर्णः **-समृद्धि-प्रतीकः**

नील-वर्णात्मकं चक्रम्, **-प्रगतिशीलतायाः प्रतीकः** (चक्रे 24 अरयः सन्ति)

ध्वजदण्डः - **अनुशासन-प्रतीकः**

अस्माकं देशस्य राजचिह्नं किम् अस्ति? **-सिंह-स्तम्भः**

सिंह-स्तम्भः - सम्राट् अशोक-स्तम्भस्य शीर्ष-अनुकृतिः अस्ति। एषः सिंह-स्तम्भः सारनाथ-संग्रहालये स्थापितः अस्ति।

चत्वारः सिंहाः सन्ति।

एकः गजः अस्ति।

एकः अश्वः (धावमानः) दौड़ता हुआ।

एकः वृषभः।

भारतस्य राष्ट्रीय-वाक्यम् किम् अस्ति ?

सत्यमेव जयते (सत्य की ही जीत होती है)

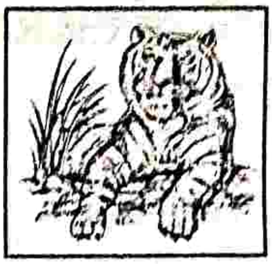

राष्ट्रीयः पशुः- **व्याघ्रः (पीतवर्णः)**

राष्ट्रीय-पक्षी- **मयूरः (नर)**

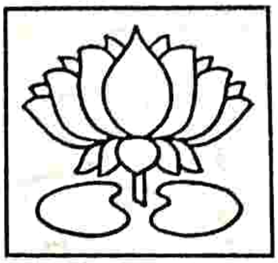

राष्ट्रीय-पुष्पम्- **कमलम् (नेलम्बोन्यूसिफेरा)**

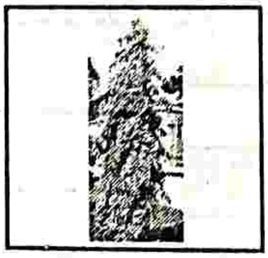

राष्ट्रीय-वृक्षः- **अशोकः**

राष्ट्रीय-फलम्- **आम्रम्**

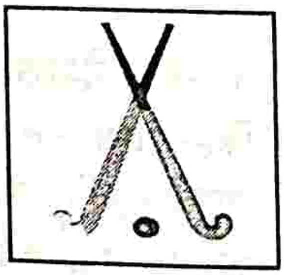

राष्ट्रीय-क्रीड़ा- **यष्टिक्रीडा**

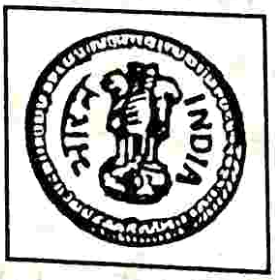

राष्ट्रीय-मुद्रा- **नाणकम्**

राष्ट्रीय-पञ्चाङ्गम् किम् अस्ति? **ग्रिगोरियन कैलेण्डर** (दिन-दर्शिका)
ग्रिगोरियन कैलेण्डर (दिन-दर्शिकायाः आधारः) **-शक सम्वत्**
राष्ट्रीय-दिनदर्शिकायाम् सन्ति - **12 मासः , 365 दिनानि वर्षे** भवन्ति।

भारतीय-राष्ट्रगानम् किम् अस्ति ? जनगणमन अधिनायक जय हे।
भारतीय-राष्ट्रगानस्य लेखकः अस्ति? गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरः
राष्ट्रगान-निमित्तं निर्धारितः समयः- 52 पलम् (सेकेण्ड)

राष्ट्रगानम्

जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा, द्राविड़-उत्कल-बंग।।
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा, उच्छल-जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।।
जन-गण मंगलदायक जय हे! भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय, जय, जय, जय हे ।।
भारतमातुः-जयोस्तु, भारतमातुः-जयोस्तु, भारतमातुः-जयोस्तु

भारतीया संस्कृतिः

मातृदेवो भव- माता को देवता मानो।
पितृदेवो भव- पिता को देवता मानो।
अतिथिदेवो भव- अतिथि को देवता मानो।
आचार्यदेवो भव- आचार्य, गुरु, शिक्षक को देवता मानो।
राष्ट्रदेवो भव- राष्ट्र को देवता मानो।
सत्यं वद- सत्य बोलो ।
धर्मं चर- धर्म का आचरण करो ।
स्वाध्यायात् मा प्रमदः- स्वाध्याय से आलस्य मत करो ।
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु- मेरा मन उत्तम संकल्प वाला हो।
वसुधैव कुटुम्बकम्- पूरी वसुधा ही (पृथिवी) हमारा परिवार है।
प्रदीपयेम जगत्सर्वम्- सम्पूर्ण संसार को हम लोग प्रकाशित करें।

ऐसी उदार भावना प्रधान हमारी भारतीय संस्कृति है।

संख्या-वैशिष्ट्यम्

प्रथमम् (1)

ईश्वरः अस्ति- एकः
सबका मालिक - एक
भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः - डा0 राजेन्द्र प्रसादः
भारतस्य प्रथमः प्रधानमन्त्री - पं. जवाहर लाल नेहरू
लौकिक-संस्कृतस्य प्रथमं महाकाव्यम् - रामायणम्
लौकिक-संस्कृतस्य प्रथमः कविः - महर्षिः वाल्मीकिः
विश्वस्य प्रथमः ग्रन्थः - ऋग्वेदः

तृतीयम् (3)

त्रि-देवः - ब्रह्मा, विष्णुः, महेशः
त्रि-शक्तिः - महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती
त्रयः कालाः - वर्तमानकालः, भूतकालः, भविष्यकालः
त्रयः पुरुषाः -प्रथम-पुरुषः, मध्यम-पुरुष, उत्तम-पुरुषः
त्रीणि वचनानि - एक-वचनम् , द्वि-वचनम् , बहु-वचनम्
त्रीणि लिङ्गानि - पुलिङ्गम्, स्त्रीलिङ्गम् , नपुंसकलिङ्गम्
राजा-दशरथस्य तिस्र राज्ञः - कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा
पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि - जलम् , अन्नम् , सुभाषितम्

चतुर्थम् (4)

चत्वारः वेदाः -ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः
चत्वारः वर्णाः - ब्राह्मणः, क्षत्रियः, वैश्यः, शूद्रः
चतस्रः दिशः - पूर्वः, पश्चिमः, उत्तरः, दक्षिणः
चत्वारः धामाः -ब्रदीनाथः-उत्तरखण्डः, **जगन्नाथपुरी**-उड़ीसा, **रामेश्वरम्**-तमिलनाडू, **द्वारिका**-गुर्जरप्रान्तः
राजा-दशरथस्य चत्वारो पुत्राः - रामः, भरतः, लक्ष्मणः, शत्रुघ्नः
चतुर्युगम् - सतयुगः, द्वापरः, त्रेता, कलियुगः

पञ्चमः (5)

पञ्च पाण्डवाः - युधिष्ठिर, भीमः, अर्जुनः, नकुलः, सहदेवः

पञ्चामृतम् - दुग्धम् , दधि, घृतम् , मधु, शर्करा

पञ्च-अङ्गुलम् - अङ्गुष्ठः, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका

षट् (6)

षड् ऋतवः -शिशिरः, बसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः।

सप्त वासराः - रविवासरः, सोमवासरः, मंगलवासरः, बुधवासरः, गुरुवासरः, शुक्रवासरः, शनिवासरः ।

सप्त पुरयः (पुरी) - अयोध्या, मथुरा, हरिद्वारम् , काशी, काञ्चीपुरम् उज्जैनः, द्वारका।

नव ग्रहाः - सूर्यः, चन्द्रः, भौमः, बुधः, गुरुः, शुक्रः, शनिः, राहुः, केतुः।

नव स्वर- वर्णाः संस्कृतव्याकरणे -अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ

नव दुर्गाः - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रिः, महागौरी, सिद्धिदात्री (माँ दुर्गा के इन नव रूपों की पूजा नवरात्रि पर्व पर हम लोगों के घरों में होती है।)

दशाननः - रावणः

एकादश- क्रिकेट-क्रीडायाम् एकादश क्रीडकाः भवन्ति

एकादश भारतस्य राष्ट्रीय-क्रीडायाम् एकादश भवन्ति

द्वादश (12)

द्वादश मासाः- चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदम् , आश्विन् , कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः।

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि- भगवतः शिवस्य ज्योर्तिलिङ्गानि सन्ति।

षोडश-संस्काराः-	भारतीय जीवने षोडश संस्काराः भवन्ति।
अष्टादश-पुराणानि-	महर्षि वेदव्यास रचित पुराणानि।
अष्टादश-अध्यायाः	श्रीमद्भगवत् गीतायाम् अध्यायाः सन्ति।

भारतीयः उत्सवः

भारतीय-नूतन-वर्षः / सम्वत्सरः	-चैत्रः (शुक्ल-प्रतिपदा)
रामनवमी (रामचन्द्रस्य जन्मदिवसः)	चैत्र-शुक्ल-नवमी
गुरुपूर्णिमा	आषाढ़-पूर्णिमा
रक्षाबन्धनम् / संस्कृत-दिवसः	श्रावण-पूर्णिमा
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद-कृष्णपक्ष-अष्टमी
विजयादशमी (रावणवधम्, लंका-विजयः)	अश्विन्-शुक्ल-दशमी
दीपावली (लक्ष्मी-पूजा)	कार्तिक-अमावस्या
बसन्त पञ्चमी (सरस्वती पूजनम्)	माघ-शुक्ल-पञ्चमी
होली	फाल्गुन-पूर्णिमा
नागपञ्चमी	श्रावण-शुक्ल-पञ्चमी
गणतन्त्र-दिवसः (भारतीय संविधानस्वीकारः तिथिः)	26 जनवरी
स्वतन्त्रता-दिवसः (भारतः स्वतन्त्रः अभवत्)	15 अगस्त
हिन्दी दिवसः	14 सितम्बर
बाल दिवसः	14 नवम्बर

अस्माकं भावना

नगरे - नगरे ग्रामे - ग्रामे, विलसतु संस्कृत - वाणी,
सदने - सदने जन - जन - वदने जयतु चिरं कल्याणी,
सत्य - शील - सौन्दर्य - समीरा ज्ञान - जला, गति - सारा,
छल-छल कल-कल प्रवहतु दिशि-दिशि पावन-संस्कृत-धारा।।

(द्वारा-संस्कृतगौरवगानम्)

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

महापुरुषः	माता	पिता	गुरुः
रामः	कौशल्या	दशरथः	कुलगुरुः वशिष्ठः
कृष्णः	देवकी	वसुदेवः	सान्दीपनिः
युधिष्ठिरः	कुन्ती	पाण्डुः	द्रोणाचार्यः
तुलसीदासः	हुलसी	आत्माराम दुबे	नरहरिदासः
छत्रपति शिवाजी	जीजाबाई	सम्भाजी	समर्थरामदासः
स्वामी विवेकानन्दः	भुवनेश्वरी	विश्वनाथदत्तः	रामकृष्णः परमहंस

प्रसिद्धिः

नाम	बाल्यनाम/उपाधिः	प्रसिद्धिः
स्वामी विवेकानन्दः	**नरेन्द्रः**	गुरुभक्तिः
भीष्म-पितामहः	**देवव्रतः**	भीष्म-प्रतिज्ञा
महात्मागान्धिः	**बापू, राष्ट्रपिता**	सत्य, अहिंसा
लक्ष्मीबाई	**मनु, छबीली**	वीरांगना
चाणक्यः	**विष्णुगुप्तः**	कूटनीतिज्ञः
बाल्मीकिः	**रत्नाकरः**	आदिकविः
तुलसीदासः	**रामबोला**	रामचरितमानस्
चन्द्रशेखरः	**आजादः**	महान-क्रान्तिकारी
रवीन्द्रनाथ टैगोर	**गुरुदेवः**	कवीन्द्रः
सुभाषचन्द्रबोसः	**नेताजी**	महान-क्रान्तिकारी
जवाहरलाल नेहरू	**चाचा जी**	प्रथम-प्रधानमन्त्री
युधिष्ठिरः	**धर्मराजः**	सत्यवादिता
हरिश्चन्द्रः	**सत्यवादी**	सत्यवादिता
श्रीरामचन्द्रः	**मर्यादा पुरुषोत्तमः**	मर्यादा-पालनम्

भारतीय-गणितम्

गणित विद्यायाः आरम्भ-ग्रन्थः - ऋग्वेदः

(ऋग्वेद से गणित का शुभारम्भ हुआ है)

गणिते शून्यस्य (0) सर्वप्रथम प्रयोगकर्ता - भारतदेशः

सर्व-प्राचीनः गणितज्ञः- - आर्यभट्टः

गणित-सूत्राणां निर्माता - श्रीनिवास रामानुजम्

विज्ञान-वैभवम्

विमान-विद्यायाः जनकः - ऋषिः भरद्वाजः

शल्य-चिकित्सायाः (सर्जरी) जनकः - सुश्रुतः

गुरुत्वाकर्षण-अन्वेषकः - भास्कराचार्यः

परमाणु-वैज्ञानिकः पूर्व-राष्ट्रपतिः - डॉ० ए.पी.जे. अब्दुलकलामः

अन्तरिक्षयात्री - कल्पना चावला

विश्व-मस्तिकं पुस्तकम्

ग्रन्थः	ग्रन्थकारः
रामायणम्	महर्षि-वाल्मीकिः
महाभारत्	महर्षि-वेदव्यासः
श्रीमद्भगवद्गीता	महर्षि-वेदव्यासः
अष्टादश पुराणानि	महर्षि-वेदव्यासः
रघुवंशमकाव्यम्	कवि-कालिदासः
दुर्गासप्तशती	ऋषिः मार्कण्डेयः
व्याकरण अष्टाध्यायी	महर्षि-पाणिनिः
रामचरित मानसः	गोस्वामी-तुलसीदासः
हनुमान चालीसाः	गोस्वामी-तुलसीदासः
नीतिशतकम्	भर्तृहरिः
पञ्चतन्त्र (कथा)	पं० विष्णुशर्मा

सुभाषिताऽमृतम्

■ **आचारः परमो धर्मः** - अच्छा आचरण ही मनुष्य का पहला धर्म है।

प्रातः स्मरणम्- **कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती।**
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ।।

प्रातः विस्तर छोड़ने से पहले बैठकर पवित्र भाव से अपने दोनों हथेलियों को अपने मुख की तरफ करें और ध्यान करें कि **मेरे-हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी रहती हैं, बीच में माता सरस्वती और मध्य में गोविन्द भगवान श्रीकृष्ण रहते हैं।** (इसके बाद)...

भूमिस्पर्शः- **समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तन मण्डले।**
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

भूमि माता है, अतः उस पर पैर रखने से पहले क्षमा माँगे- **हे समुद्र में निवास करने वाली देवी! सम्पूर्ण पर्वतों का भार सहने वाली हे विष्णु-पत्नी तुम्हें प्रणाम करता हूँ, मेरे पैर स्पर्श के लिए मुझे क्षमा करो माँ।**

इसके बाद माता-पिता और बड़ों को 'सुप्रभातम्' कहते हुए प्रणाम करें।

■ **अभिवादन-शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः-विद्या-यशो-बलम् ।।

जो नित्य प्रति बड़ों को प्रणाम करते हैं, वृद्धों की सेवा करते हैं उनकी **आयु, विद्या, यश** और **बल** इन चारों की वृद्धि होती है।

■ **छात्राणाम् अध्ययनं तपः** - छात्रों को पढ़ाई करना ही तप है।

■ **स्वाध्यायात् न प्रमदितव्यम्** -स्वाध्याय (पढ़नें) में प्रमाद, आलस नहीं करना चाहिए।

■ **अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।**
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम् ।।

आलसी को विद्या कहाँ, और विद्याहीन को धन कहाँ, धनहीन को मित्र कहाँ और मित्रहीन को सुख कहाँ मिलता, अर्थात् नहीं मिलता है।

- **येषां न विद्या न तपो न दानम् , ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।**
ते मर्त्यलोके भुवि-भार-भूताः मनुष्य-रूपेण मृगाः चरन्ति।।
जिन मनुष्यों के पास न विद्या है, न तप है, न दान है, न ज्ञान है न शील है, न गुण है, न धर्म है वे इस मृत्युलोक में पृथिवी के ऊपर भार के समान हैं, और मनुष्य के रूप में मानों पशु घूम रहे हैं।
- **सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।**
सज्जनों की संगति क्या-क्या नहीं करती, अर्थात् सब कुछ करती है।
- **सर्वे गुणाः काञ्चनम् आश्रयन्ति।** सभी गुण सोने का ही आश्रय लेते हैं।
- **यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो, मा ब्रूहि दीनं वचः।**
जिस-जिस को देखो उस-उसके सम्मुख अपनी दीनता (दुःख) मत कहो।
- **न्यायत् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।**
धीर (महान्) लोग कभी भी न्याय के मार्ग से हटते नहीं हैं।
- **ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।**
ज्ञान से रहित मनुष्य पशु के समान होते हैं।
- **किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।**
स्वर्ग में स्थित कल्पलता वृक्ष की तरह विद्या क्या-क्या नहीं देती अर्थात् सब कुछ देती है।
- **आहार-शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः।** आहार शुद्ध होने से बुद्धि शुद्ध रहती है। (अतः- अपना खान-पान शुद्ध, सात्विक एवं पवित्र रखना चाहिए)
- **कु वाक्यान्तं च सौहृदम् ।** अप्रिय वचन बोलने से मित्रता समाप्त हो जाती है।
- **गुरु शुश्रूषया विद्या।** गुरुजनों की सेवा करने से विद्या आती है।
- **तपसा किं न सिद्ध्यति।** तप (परिश्रम) से हर कार्य सिद्ध होते हैं।
- **विद्या ददाति विनयं।** विद्या विनय (विनम्रता) देती है।
- **विद्या-धनं सर्व-धनं प्रधानम्।** विद्यारूपी धन सभी धनों में श्रेष्ठ है।
- **विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।** विद्वानों की पूजा सब जगह होती है।
- **लोभः पापस्य कारणम् ।** लालच करना पाप का कारण होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता

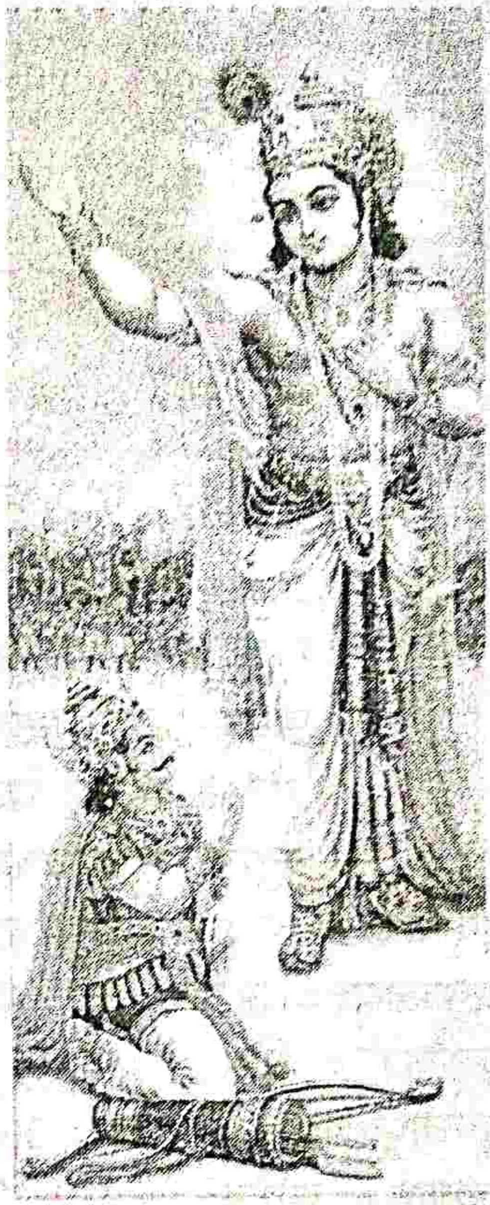

श्रीमद् भगवद्गीता भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। यह सनातन धर्म (हिन्दुओं) का धर्मग्रन्थ है। यह महाभारत का एक अंग है। इसके रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। **अन्याय पर न्याय, अधर्म पर धर्म के विजय युद्ध महाभारत** में शत्रुरूप अपने बान्धवों को देख अर्जुन का मन शिथिल हो गया। वह युद्धरूपी अपने कर्त्तव्य से भागने लगे। तब अर्जुन के सारथी भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को रोका और अर्जुन के अनेक शंकाओं का समाधान, करते हुए कर्म करने का उपदेश दिया। इस उपदेश से अर्जुन ने युद्ध किया और विजय प्राप्त की। इसीलिए महाभारत युद्ध को **धर्मयुद्ध, व न्याययुद्ध** कहते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण से **दिव्य दृष्टि** (एक स्थान पर बैठे ही सम्पूर्ण महाभारत के युद्ध को देखने की दृष्टि) **संजय ने** प्राप्त की। संजय ने **दिव्य-दृष्टि** से सबकुछ देखते हुए कौरवों के पिता धृतराष्ट्र से भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उपदेशित गीता को सुनाया। इस प्रकार **श्रीकृष्ण ने अर्जुन को एवं संजय ने धृतराष्ट्र को गीता सुनायी।**

साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा गायी गई या कही गई जो बात उसे **'श्रीमद्भगवद्गीता'** कहते हैं।

- गीता वेद, वेदान्त, दर्शनादि सम्पूर्ण शास्त्रों का सार है।
- गीता में मानव जीवन को सफल बनाने के सभी उपाय बताये गये हैं।

श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अध्यायाः सन्ति-	अष्टादश
सनातन (हिन्दु) धर्मग्रन्थः अस्ति-	श्रीमद्भगवद्गीता
गीतायाः उपदेश कर्त्ता-	श्रीकृष्णः
गीतोपदेश प्रयोजनम् -	महाभारत-युद्धे अर्जुनस्य मोहभङ्गः
गीतायाः उपदेशः कति दिनानि अभवत् -	अष्टादश
गीतायाः वक्ता-	सञ्जयः
गीतायाः श्रोता-	धृतराष्ट्रः
अर्जुनस्य धनुषः नाम अस्ति -	गाण्डीवम्

महाभारत युद्ध आरम्भ के पहले योद्धओं ने अलग-अलग शंख बजाया

पाञ्चजन्यं हृषीकेशां देवदत्तं धनञ्जयः ।
पौण्ड्रं दद्धमौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः।।
अनन्त-विजयं राजा कुन्ती पुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोष - मणिपुष्पकौ ।।

हृषीकेश = श्रीकृष्णः = पाञ्चजन्यम्
धनञ्जयः = अर्जुनः = देवदत्तम्
वृकोदरः = भीमः = पौण्ड्रम्
कुन्तीपुत्रः = युधिष्ठरः = अनन्तविजयम्
नकुलः = सुघोषः
सहदेवः = मणिपुष्पकः

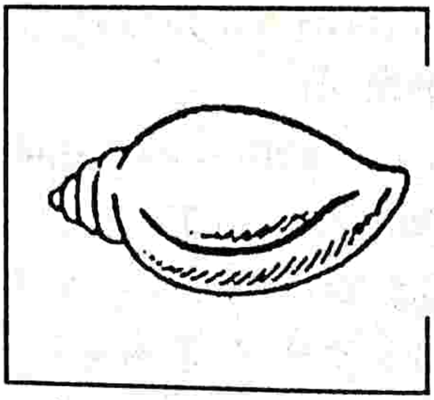

अर्थात् श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य, अर्जुन ने देवदत्त, भीम ने पौण्ड्र, युधिष्ठिर ने अनन्त विजय, नकुल ने सुघोष और सहदेव ने मणिपुष्पक नामक शंख बजाया।

गीताऽमृतम्

■ **हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।**
यदि तुम युद्ध में मारे जाते हो तो स्वर्ग प्राप्त करोगे, और यदि तुम विजयी होगे तो इस पृथिवी का राज्य भोगोगे।(अतः कर्म करो, श्रम करो)

- **कर्मण्येवा-धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
  तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में नहीं, अतः कर्म करो।
- **योगः कर्मसु कौशलम्-** कर्मों में कुशलता ही योग है।
- **नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।** (3/08)
  तुम अपने निर्धारित कर्त्तव्य को करो, क्योंकि कर्म न करने से अच्छा कर्म करना ही श्रेष्ठ है।
- **स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।** (3/35)
  अपने धर्म में तो मरना भी अच्छा है, क्योंकि दूसरे का धर्म भय देने वाला है।
- **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत।**
  अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4/7)
  हे अर्जुन! जब-जब धर्म की हानि होती है, और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं ही अपने रूप को प्रकट करता हूँ।
- **परित्राणाय साधूनां विनाशय च दुष्कृताम् ।**
  धर्म-संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।। (4/8)
  साधु एवं सज्जन पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पापियों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए प्रत्येक युग में मैं जन्म लेता हूँ।
- **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम् इह विद्यते।** (4/38)
  इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है।
- **श्रद्धावाँन् लभते ज्ञानम्** - श्रद्धावान मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त करते हैं। (4/39)
- **वेदानां सामवेदोऽस्मि-** वेदों में मैं सामवेद हूँ। (10/22)
- **अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्-** सब वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ। (10/26)

काल-क्रमेण जगतः परिवर्तमानम्

(समय की गति के अनुसार यह संसार बदलता रहता है।)

समय-बोधः

नव वादनम्

पञ्च अधिक-
नव वादनम्

सपाद-
नव वादनम्

सार्ध-
नव वादनम्

पादोन
दश वादनम्

पञ्च-न्यून
दश वादनम्

दश वादनम्

ध्यातव्य- समय की जानकारी के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान दें-

1. **इदानी कति वादनम्** (इस समय कितने बजे हैं।)
   इदानी नव वादनम् (इस समय नौ बजे हैं)
2. **भवान् कति वादने विद्यालयं गच्छति।** (आप कितने बजे विद्यालय जाते हैं)
   अहम् दश वादने विद्यालयं गच्छामि। (मैं दस बजे विद्यालय जाता हूँ)

इस प्रकार समय बताने के लिए **वादनम्** एवं क्रिया के साथ बताने के लिए **वादने** का प्रयोग करें। (एक वादनम् , द्वि वादनम्, त्रि वादनम्, चतुर्वादनम्, पञ्च वादनम्.. आदि)

संख्या-पाठः Numbers (नम्बर्स)

१	एकम्	८	अष्ट	१५	पञ्चदश
२	द्वे	९	नव	१६	षोडश
३	त्रीणि	१०	दश	१७	सप्तदश
४	चत्वारि	११	एकादश	१८	अष्टादश
५	पञ्च	१२	द्वादश	१९	नवदश
६	षड्	१३	त्रयोदश	२०	विंशतिः
७	सप्त	१४	चतुर्दश	२१	एकविंशतिः

२२	द्वाविंशतिः	५०	पञ्चाशत्	७८	अष्ट सप्तति
२३	त्रयोविंशतिः	५१	एकपञ्चाशत्	७९	नव सप्ततिः
२४	चतुर्विंशतिः	५२	द्विपञ्चाशत्	८०	अशीतिः
२५	पञ्चविंशतिः	५३	त्रिपञ्चाशत्	८१	एकाशीतिः
२६	षड्विंशतिः	५४	चतुःपञ्चाशत्	८२	द्व्यशीतिः
२७	सप्तविंशतिः	५५	पञ्च पञ्चाशत्	८३	त्र्यशीतिः
२८	अष्टाविंशतिः	५६	षट् पञ्चाशत्	८४	चतुरशीतिः
२९	नवविंशतिः	५७	सप्तपञ्चाशत्	८५	पञ्चाशीतिः
३०	त्रिंशत्	५८	अष्ट पञ्चाशत्	८६	षडशीतिः
३१	एकत्रिंशत्	५९	नव पञ्चाशत्	८७	सप्ताशीतिः
३२	द्वात्रिंशत्	६०	षष्टिः	८८	अष्टाशीतिः
३३	त्रयस्त्रिंशत्	६१	एक षष्टिः	८९	नवाशीतिः
३४	चतुस्त्रिंशत्	६२	द्वि षष्टिः	९०	नवतिः
३५	पञ्चत्रिंशत्	६३	त्रि षष्टिः	९१	एकनवतिः
३६	षट् त्रिंशत्	६४	चतुः षष्टिः	९२	द्विनवतिः
३७	सप्तत्रिंशत्	६५	पञ्च षष्टिः	९३	त्रिनवतिः
३८	अष्टात्रिंशत्	६६	षड् षष्टिः	९४	चतुर्नवतिः
३९	नवत्रिंशत्	६७	सप्त षष्टिः	९५	पञ्चनवतिः
४०	चत्वारिंशत्	६८	अष्ट षष्टिः	९६	षण्णवतिः
४१	एकचत्वारिंशत्	६९	नव षष्टिः	९७	सप्तनवतिः
४२	द्विचत्वारिंशत्	७०	सप्ततिः	९८	अष्टनवतिः
४३	त्रिचत्वारिंशत्	७१	एक सप्ततिः	९९	नवनवतिः
४४	चतुश्चत्वारिंशत्	७२	द्वि सप्ततिः	१००	शतम्
४५	पञ्चचत्वारिंशत्	७३	त्रि सप्ततिः	१०००	सहस्रम्
४६	षट् चत्वारिंशत्	७४	चतुः सप्ततिः	१००००	अयुतम्
४७	सप्तचत्वारिंशत्	७५	पञ्च सप्ततिः	१०००००	लक्षम्
४८	अष्टचत्वारिंशत्	७६	षट् सप्ततिः	१००००००	नियुतम्
४९	नवचत्वारिंशत्	७७	सप्त सप्ततिः	१०००००००	कोटिः

धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा

(धर्म ही समस्त विश्व का आधार है)

धर्म संस्थापकाः

श्रीमद् आद्यशंकराचार्यः

- वैदिक-संस्कृति-संस्थापकः
- भारतस्य पूर्वे- गोवर्धनमठः
- पश्चिमे- शारदामठः
- उत्तरे- ज्योर्तिमठः
- दक्षिणे-शृंगेरीमठ-संस्थापकः

भगवान् महात्मा बुद्धः

- बौद्धधर्म- प्रवर्तकः
- बाल्यनाम-सिद्धार्थः
- माता-महामाया
- पिता-शुद्धोधनः
- प्रथम धर्मोपदेशः- सारनाथः, वाराणसी

स्वामी महावीरः

- जैन-धर्म-प्रवर्तकः
- बाल्यनाम-वर्धमानः
- माता-त्रिशला
- पिता-सिद्धार्थः

चतुर्विंशतितमः (24) तीर्थंकरः

स्वामी दयानन्द सरस्वती

- आर्य-समाज-संस्थापकः
- बाल्यनाम-मूलशंकरः
- प्रसिद्ध-उद्घोषः वेदों की ओर लौटो

स्वामी विवेकानन्दः

- प्रखर-कर्म-योद्धा
- बाल्यनाम- नरेन्द्र-नाथ-दत्तः
- माता-भुवनेश्वरी
- पिता- विश्वनाथ-दत्तः

रामकृष्ण मिशन संस्थापकः

अनन्तश्री करपात्री स्वामी

- वैदिक-सिद्धान्त-प्रतिपादकः
- वेद-भाष्यकारः
- आधुनिक वेदार्थ-चिन्तकः
- धर्म-संघ-संस्थापकः

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

(हे महापुरुष-तुम्हारे चरणों में प्रणाम करता हूँ)

स्वतन्त्रता-आन्दोलन-योद्धा

आजाद चन्द्रशेखरः

• महान् क्रान्तिकारी

माता- जगरानी देवी पिता-पं. सीताराम तिवारी

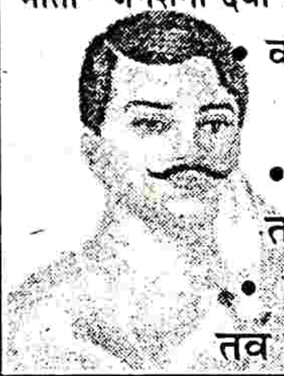

• कारागार-अधीक्षकः- तव नाम किम्?

• मम नाम आजादः तव पितुः नाम किम्?

• पितुः नाम स्वतन्त्रता तव निवासः -कारागारम्

सरदार भगत सिंहः (भाग्यवान्)

• शहीदे आजम

• महान् क्रान्तिकारी

• पिता- किशन सिंहः

• प्रसिद्ध-उद्घोषः- इन्कलाब जिन्दाबाद

सुभाषचन्द्र बोस (नेताजी)

• आजाद हिन्द फौज-संस्थापकः

• प्रसिद्ध-उद्घोषः- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा

• जय हिन्द!

महारानी लक्ष्मीबाई

(मनु/छबीली)

• माता-भागीरथी बाई, पिता-मोरोपन्तः

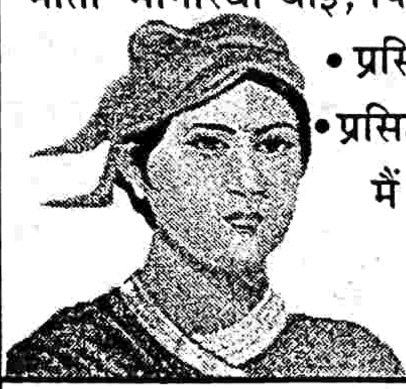

• प्रसिद्ध-वीरांगना

• प्रसिद्ध-उद्घोषः- मैं अपनी झाँसी कभी न दूँगी

लाला-लाजपत-रायः

• प्रसिद्धः क्रान्तिकारी नेता

• प्रसिद्ध-उद्घोषः मेरे सिर पर लाठी का एक-एक प्रहार अंग्रेजी शासन के कफ़न की कील साबित होगा

बाल-गंगाधर-तिलकः(लोकमान्यः)

• प्रसिद्धः क्रान्तिकारी नेता

• प्रसिद्ध-उद्घोषः स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है

• महाराष्ट्रे भगवान् गणपति एवं छत्रपति-शिवाजी पूजा-प्रेरकः

राष्ट्र - नायकाः

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी

बापू

• माता- पुतलीबाई, पिता-करमचन्द गाँधी

• प्रसिद्ध-उद्घोषः-
करो या मरो, हे राम

• प्रसिद्धं भजनम्
रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीताराम।
ईश्वर अल्ला तेरो नाम
सबको सम्मति दे भगवान॥

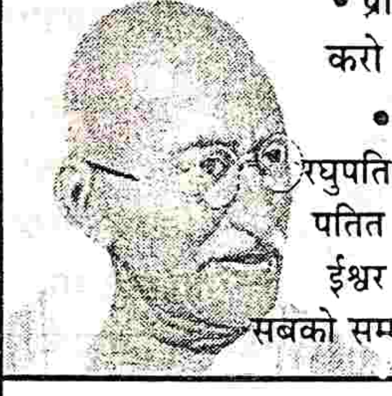

डॉ0 राजेन्द्र प्रसादः बाबू

• प्रथम राष्ट्रपतिः

• सम्बिधान निर्मात्रि-

• सभा-अध्यक्षः

• सम्मानः-
भारत-रत्नः

पं0 जवाहर लाल नेहरू

• चाचा जी

• प्रथम प्रधानमन्त्री

• नवभारत निर्माता

• प्रसिद्ध-उद्घोषः-
आराम हराम है

• प्रसिद्धं-पुस्तकम्-
भारत की खोज
(डिस्कवरी ऑफ इण्डिया)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

• प्रथम-उपराष्ट्रपतिः

• महान् दार्शनिकः
एवं शिक्षकः

• सम्मानः-
भारत रत्नः

• (इनकी जन्म तिथि
5 सितम्बर को *शिक्षक*
दिवस के रूप में मनाया जाता है

डॉ0 ए.पी.जे. अब्दुल कलामः

• पूर्व राष्ट्रपतिः

• प्रक्षेपास्त्र-जनकः
(मिशाइल मैन)

• नित्यप्रति
दैनिक जीवने
श्रीमद्भगवद्
गीता पाठ

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

• पूर्व प्रधान मन्त्री

• प्रसिद्धः कविः
संयुक्त राष्ट्र संघे
(विश्व मंच)

• प्रथम हिन्दी
भाषण कर्ता

• प्रसिद्ध-उद्घोषः
जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान

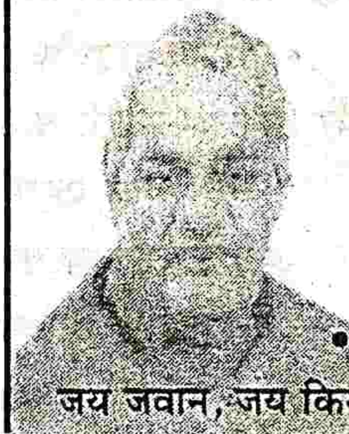

शाक-नामानि

आलुः

गोजिह्वा

रक्तकम्

प्लाण्डुः

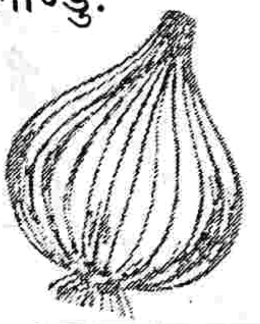

लशुनम्

आर्द्रकम्

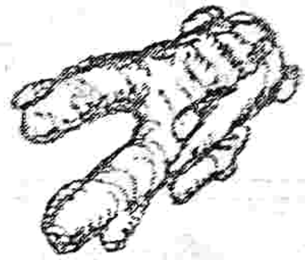

फल-नामानि

आम्रम्

सेवम्

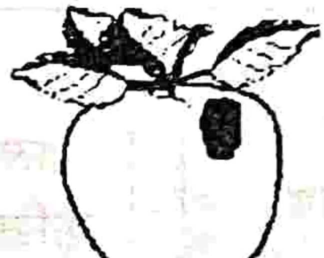

कदलीफलम्

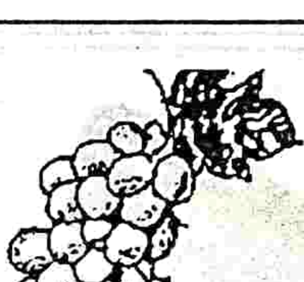

द्राक्षा

दाडिमम्

लीचिका

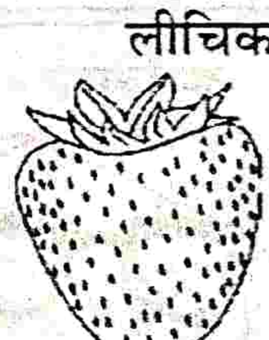

दैनिक-उपयोगीनि-वस्तूनि

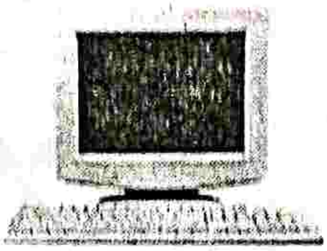

संगणक-यन्त्रम्

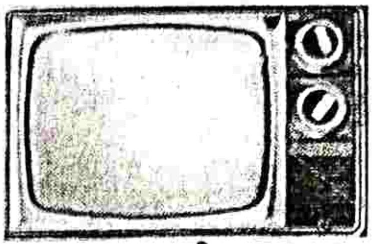

दूरदर्शनम्

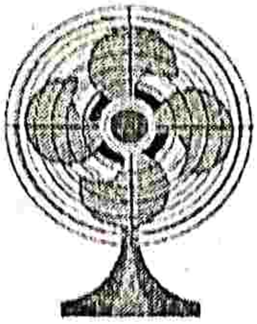

व्यजनम्

आसन्दः

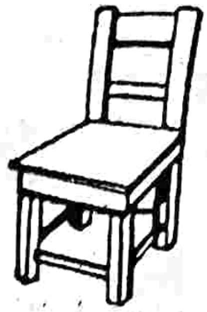

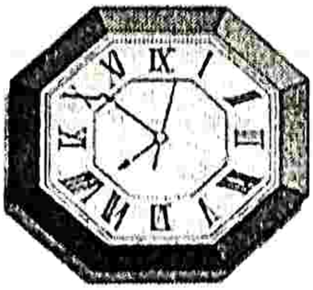

घटी

उत्पीठिका

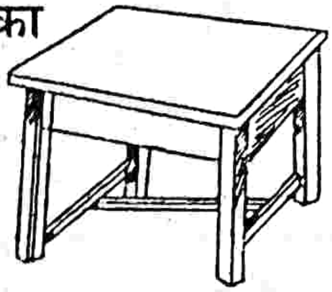

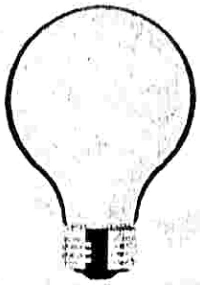

दीपः
(कन्दः)

तालः-
कुञ्चिका

उपनेत्रम्

कंकतम्

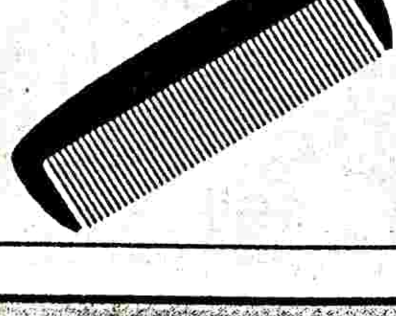

शरीराङ्गानां नामानि

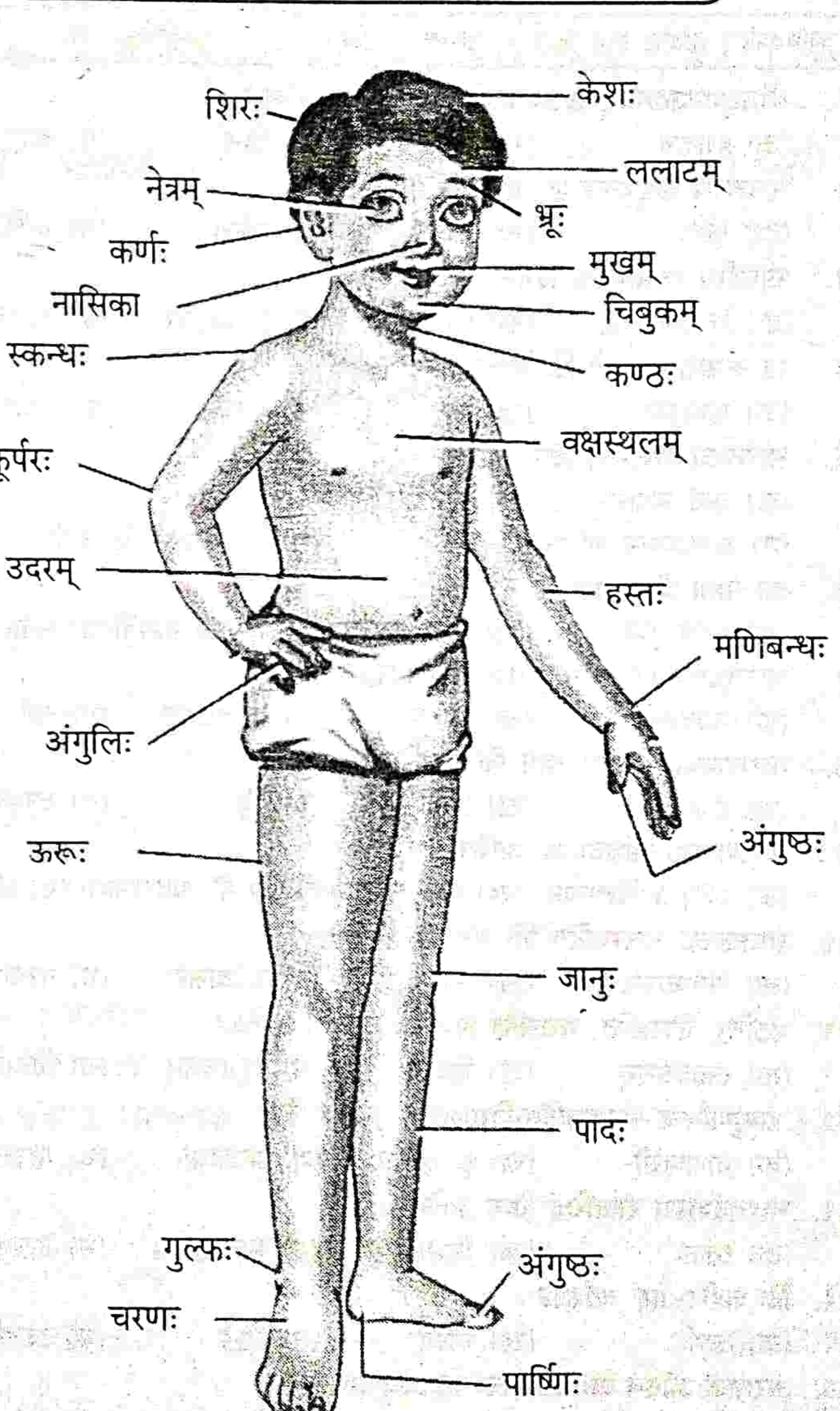

कपोलः (गाल), अधरः, ओष्ठः (ओंठ), श्मश्रु (मूँछ), जिह्वा (जीभ), दन्तः (दाँत), नखः (नाखून), मुष्टीः (मुट्ठी), नाभिः (नाभी), कटिः (कमर),

बालवर्गः (कक्षा-3 ,4 ,5) समयः 1 होरा पूर्णाङ्कः -85 17/अ

1. श्रीमद्भगवद्गीता कस्य धर्मस्य धर्मग्रन्थः अस्ति?
(क) इस्लाम (ख) सिख- (ग) हिन्दु (घ) बौद्ध
2. भारतस्य राष्ट्रध्वजे कः वर्णः न अस्ति?
(क) श्वेतः (ख) कृष्णः (ग) हरितः (घ) कपिसः
3. भारतीय गणतन्त्रता दिवसः कदा मान्यते?
(क) 26 जनवरी (ख) 15 अगस्त (ग) 2 अक्टूबर (घ) 30 जनवरी
4. 12 संख्या संस्कृते किं लिख्यते?
(क) एकादश (ख) दश (ग) पञ्चदश (घ) द्वादश
5. भारतस्य राष्ट्रगानं किम् अस्ति?
(क) वन्दे मातरम् (ख) सारे जहाँ से अच्छा-
(ग) जनगणमन अधिनायक जयहे (घ) ऐ मेरे वतन के लोगों
6. का माता वीणां वादयति?
(क) माता दुर्गा (ख) माता सरस्वती- (ग) माता गायत्री (घ) माता पार्वती
7. भारतद्वारम् (India gate) कुत्र अस्ति?
(क) नवदेहली (ख) मुम्बई- (ग) कोलकाता (घ) चेन्नै
8. वाराणस्याः द्वितीयं नाम किम् अस्ति?
(क) प्रयागः (ख) शिवपुरम् (ग) गङ्गा (घ) काशी
9. वाराणस्याः सांसदः कः अस्ति?
(क) योगी आदित्यनाथः (ख) मा. नरेन्द्र मोदी (ग) डॉ. महेन्द्रनाथः (घ) डॉ. राजेश मिश्रः
10. सप्ताहस्य आरम्भदिनं किं भवति?
(क) सोमवासरः (ख) शनिवासरः (ग) रविवासरः (घ) गुरुवासरः
11. पठन्ति, लिखन्ति, गच्छन्ति अत्र किं वचनम् अस्ति?
(क) एकवचनम् (ख) द्विवचनम् (ग) बहुवचनम् (घ) किमपि न
12. 'सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालयः' कुत्र अस्ति?
(क) वाराणसी- (ख) इलाहाबाद- (ग) अयोध्या- (घ) गोरक्षपुर-
13. भारतदेशस्य राजचिह्नं किम् अस्ति?
(क) ध्वजः (ख) सिंहस्तम्भः (ग) भारतद्वारम् (घ) वटवृक्षः
14. किं शरीर-अङ्गं नास्ति?
(क) कर्णः (ख) निशा (ग) जिह्वा (घ) उदरम्
15. अस्माकं जीवने कः संस्कारः महत्त्वपूर्णम् अस्ति?
(क) नामकरणम् (ख) मुण्डनम् (ग) विवाहः (घ) सर्वम्
16. भारतदेशस्य राष्ट्रियः पशुः किम् अस्ति?
(क) सिंहः (ख) गजः (ग) व्याघ्रः (घ) गौः

गंगा हरीतिमा योजना को समर्पित
भारतीय वैभव ज्ञान परीक्षा-2018-19